न समाई ॥ रूप अनूप देखि सुत सुंदर जनम-
दरिद्र मनहुँ निधि पाई ॥ सिंहपँवरपर नौबति
बाजै सरस राग बाजै सुरनाई ॥ वंदनवार पताका
जहँ तहँ गजमोतिनकी चौक पुराई ॥ अलिगण
गान करैं पंचमस्वर सुनत कोकिला कंठ लजाई ॥
महलमध्य आनँद अति सरसत बरसत सुमन दे-
बसमुदाई ॥ यांचक पाय अघाय सराहत दै अ-
सीस निज निज गृह जाई ॥ मधुरअली लै गोद
खेलावत मुदित मातु सुत कंठ लगाई ॥ ५ ॥
रा० झंझोटी ॥ लषि सुत नृपति रानि सुख पा-
वैं ॥ रतनचौक खेलत चारिउ भैया कहुं दृग मूंदि
हँसत पुनि धावैं ॥ कहुँ पग पटकि मचलि फिरि
सुसकत करि किलकार मातुढिग आवैं ॥ तब
मुख चूमि गोद जननी लै कहि लालन पयपान
करावैं ॥ बालविनोद महलमधि माँच्यो अलिगण
आय हरषि उर गावैं ॥ मधुरअली ब्रह्मादि देव

सब बैठि विमान सुमन बरसावैं ॥ ६ ॥ रा० दे-
श. ॥ कौशल्या रानी सुतन झुलावै पलना ॥
चारिउ भाय प्राणसम जानति परम छल ना ॥
कहुँ कहि वत्स तात हे भैया कहुँ हीराललना ॥
पुनि लै गोद खेलावति गावति लषि मुख चित
चल ना ॥ यहि सुखमें बीतत निशिवासर बिन-
देखे कल ना ॥ मधुरअली रघुवरकी बिहँसानि
भूलत छिन पल ना ॥ ७ ॥ रा० गारा ॥ लेहौं
नेग मैं करको कँगनवां ॥ महरानी साहेब सुनु
बिनती सुखी रहैं तेरे चारिउ ललनवां ॥ गाय ब-
जाय रिझाय मजेसे ढाढ़िनि मचली भूपअँगनवां ॥
मधुरअली सुनि देति निछावरि राममातु मन
मुदित मगनवां ॥ ८ ॥ रा० भूपसाख ॥ अवधमें
सुखकी बेलि बई ॥ जबते प्रगट भये रघुनंदन जै-
जै कार भई ॥ हरषि नरेश बोलाय द्विजनको विधि-
वत दान दई ॥गृह पुर द्वार नगारे बाजत अलिगण

राम छई ॥ निज पराय नहिँ सुनहिँ श्रवण को-
उ यकरस प्रीत नई ॥ मधुर अली विधुवदन मातु
लषि बालक गोद लई ॥ ९ ॥ रा० कालँगड़ा ॥
यक मांगन ढाढ़ी आयो ॥ राजा दशरथ कुँवर
प्रगट भे आज खबरि अस पायो ॥ दीन अभय म-
णि बसन विभूषण पावत मोद बढ़ायो ॥ मधुर
अली जै शब्द बोलि नचि पावत जस जेहिँ गायो
॥ १० ॥ रा० देश ॥ सजि सखी सुमंगल गावैं ॥
सुनि कोकिला कंठ लजावैं ॥ जनम भयो रघुनंद-
नको सुनि परम प्रमोद बढ़ावैं ॥ महाराज अव-
धेश मुकुटमणि भूषण बसन लुटावैं ॥ बंदनवार
पताका जहँ तहँ मोतिन चौक पुरावैं ॥ करि
शृंगार धेनु भूपति बहु विप्रन बोलि देवावैं ॥ जो
अभिलाष जौन जाको जस सो यांचक जन पा-
वैं ॥ जैजैकार भयो सुरपुरमें सुरन सुमन बरसा-
वैं ॥ मधुरअली आनंद महलमें व.वि कहि पार

न पावैं ॥ ११ ॥ रा० जांगला ॥ बधाई बाजि रही प्यारी ॥ गुणके धाम सुवन प्रगटे हैं ऐसे सुखकारी ॥ अलिगण नाचि सोहिलो गावैं दै दै कर तारी ॥ मधुरअली दशरथ नरेशकी भली भाग भारी ॥ १२ ॥ रा० झपताल ॥ आजु अवधेशके महल मंगल भया ॥ जनम सुनि सुवनको हरष दशरथ हिये वो बहु विप्र दै दान सुखमें छयो ॥ लिये कर थार बर भामिनी मुदभरी जाय नृपभवनमें गाय आनँद दयो ॥ बैठे विमानन बधुन लै सुरन बरषि बहु फूल दुख सबनको सो गयो ॥ बीते द्वैदिन जबै तबै केकई सुमित्रा समय शुभ पायकै सुवन सोऊ जयो ॥ बजत नभ नगरमें बाजने जोर तहँ मधुरआलि तोरि तृण नैनफल सो लयो ॥ १३ ॥ रा० कालँगड़ा ॥ मैं ढाढ़ी मांगन आयों ॥ रघुवरजनम सुहावन पावन सुनि अतिसुख पायों ॥ चौदह भुवन प्रताप

तेज बल जेहिको नृप छायो ॥ गाय बजाय नृत्य नानाबिधि ऐसो यश गायो ॥ मधुरअली आनंद भूप होइ पट भूषण पहिरायो ॥ १४ ॥ रा० जांगला ॥ भूपअँगनवां खेलैं चारिउ भैया ॥ युगुल गौर युग श्याम मनोहर अँग अँगमें अतिही छबि छैया ॥ तोतर बचन कहत हँसि हेरत देखतही हरषैं सब मैया ॥ मधुरअली आनंद अवधमें घर घर मृहलन बजति बधैया ॥ १५ ॥ रा० देसमलार ॥ नृपतिउर सुखको वार न पार ॥ आनँदकरण हरण सब दुखके सुंदर राजकुमार ॥ राम लषण अरु भरत शत्रुहन जीवनप्राण अधार ॥ रतनचौकमें खेल मच्यो है शोभा अजब वहार ॥ देखि देखि मुखचंद मधुरअलि मातु करहिँ बलिहार ॥ ॥ १६ ॥ रा० भूपसाख ॥ राम लषन मांगन मुनि आये ॥ सरजूजल अस्नान ध्यान करि नृपसमीप निज खबरि जनाये ॥ मुनिआगमन सुनत अजनं

दन आसन छोंड़ि तुरत उठि धाये ॥ मुनिपद वंदि हरषि हिय भूपति प्रेमसहित आसन बैठाये ॥ पग पखारि पूजन करि आछे चारौ कुँवर प्रणाम कराये ॥ तब नृप कहत जोरि कर मुनिसे कौनेहेत नाथ तुम आये ॥ मधुरअली निशिचर बधबेको श्याम गौर सुत मांगन आये ॥ १७ ॥ रा० सिंध॥ मुनि मैं राम लषन नहिँ दैहौं ॥ जीवन प्रान सुवन प्रभु मेरे तिन्हैं देत दुख पैहौं ॥ आयसु होइ नाथ यहि औसर सेनसहित मैं जैहौं ॥ मधुरअली सब मारि निशाचर विमल यज्ञ करवैहौं ॥ १८ ॥ रा० सिंध ॥ भूपति मानि बचन हितकी ॥ शोच बिहाय धीर धरि सुत दोउ हरषसहित अब दीजै ॥ तुम्हैं सुयश कल्याण बेटनको सीख सुधा सुनि लीजै ॥ मधुरअली सुख समुझि कुँवर दोउ सौंपि प्रेमरस पीजै ॥ १९ ॥ रा० भूपसाख ॥ गाधिसुवनसँगमें दोउ भाई ॥

राम लषण मनहरन वीर वर श्याम गौर सुंदर सुखदाई ॥ कटि निषंग कर बाण शरासन चले जात मारग हरषाई ॥ तेहि छिन तड़पि ताड़का धावति आवति निकट जानि रघुराई ॥ एकहि बान प्रान हरि लीन्हो दीन्ही आपन धाम पठाई ॥ मधुरअली ब्रह्मादि देव सब हरषित हिये सुमन बरसाई ॥ २० ॥ रा० सहाना ॥ गाधि-सुवन आश्रम निज आये ॥ जे ऋषि रहत चरि-त बनभीतर श्रवण सुनत आतुर उठि धाये ॥ अरस परस्पर मिलत सबै मुनि राजकुँवर दोउ हृदय लगाये ॥ मधुरअली ऋषि यज्ञ जतनको राम लषन उठि सहज सुहाये ॥ २१ ॥ रा० भोपाली ॥ रघुबर मुनिकी यज्ञ सम्हारे ॥ सुभट सुबाहु अगिन शर जारे ॥ मारि मरीचहिँ सिंधु उतारे ॥ जै जै करत सुमन सुर बरखत चिरंजीव दोउ राजदुलारे ॥ कौशिक मुनिसँग राम लषन

बर मधुरअली आगे पगु धारे ॥ २२ ॥ रा० दे-
श.॥ रघुबर कोमल बचन बतात ॥ मुनिनायक
लायक सब जानत बूझतमें सकुचात ॥ कहौ
नाथ उपबन या कैसो खग मृग कोउ न देखा-
त ॥ गौतमनारि अहिल्या अघकृत पतिश्रापित
जड़गात ॥ भई पषान तबैते जानौ दुखमें निशि-
दिन जात ॥ मधुरअली तुह्मरी रघुनंदन पदरज
चाहति तात ॥ २३ ॥ रा० इमनी ॥ चरणरज
ऋषिरमणी पाई ॥ भई प्रगट जस रही दिव्य तन
शोभा अति छाई ॥ जोरि कर सनमुख चित
ल्याई ॥ ऐसे बचन सुधासे मीठे कर अस्तुति
दरसाई ॥ तुम्हैं ऐसी प्रभु बनिआई ॥ काम क्रो-
ध मद मोह नसावन संतन सुखदाई ॥ तुम्हारी
जै जै रघुराई ॥ मधुरअली कहि पतिपुर गै सुर
फूलन बरसाई ॥ २४ ॥ रा० देश ॥ सुरसरितीर
वीर दोउ आये ॥ गौर श्याम सुखधाम मनोहर

गुरु अनुशासन मांगि नहाये ॥ पुनि द्विज दान दीन नानाविधि मुनिपदकमल वंदि सुख पाये ॥ मधुरअली पूंछत रघुनंदन बचन सनेह शील उपजाये ॥ २५ ॥ रा० झंझोटी ॥ गंग अवनि प्रभु केहिविधि आई ॥ सुनि मृदु बचन कह्यो मुनि उतपति जेहिप्रकार सुरसरि महि आई ॥ जाको सुयश सुनत सुख मानत आनँदकंद लषन रघुराई ॥ मधुरअली ऋषि राजकुँवर बर बेगि विदेहनगर नियराई ॥ २६ ॥ रा० भोपाली ॥ सुनत बिदेह मिलन मुनि आये ॥ मंत्री औ सिरदार संत द्विज लै सँग जाय सीस पद नाये ॥ दै असीस उर ल्याय गाधिसुत हरषित कुशल बूझि बैठाये ॥ मधुरअली सब सभानिकट नृप सीस नवाय बैठि सुख पाये ॥ २७ ॥ रा० देश ॥ राम लषण आये दोउ भाई ॥ मुनिमनहरन कुँवर सुषमानिधि गये रहे देखन फुलवाई ॥ गुरुपद

वंदि कमल कर जोरे लषि नृप उठत सभा समुदाई ॥ मधुरअली कहि तात गाधिसुत दक्षिण वाम भाग बैठाई ॥ २८ ॥ रा० इमनी ॥ लखि लखि रूप भूप अनुरागे ॥ अति मनहरन सुभग सुखसागर कोटिकाम पटतर नहिँ लागे ॥ कहौ नाथ काके साहिजादे देखत इन्हैं ब्रह्मसुख त्यागे ॥ मधुरअली लै लाहु दृगनको श्रीमिथिलेश विदा तब मांगे ॥ २९ ॥ रा० इमनी ॥ देखन नगर चले दोउ भाई ॥ श्याम गौर गंभीर गात मृदु भूषण लसत अंग सुखदाई ॥ पीत पाग सिर पेंच सबुजरँग कलँगीकी लटकनि मनभाई ॥ कुंडल कान कपोलनं झलकैं अलकैं अतर भीजि छबि छाई ॥ नयन मयनके बान विशिषसम भृकुटी वंक चाप बनिआई ॥ नासा अधर चिबुक चित चोरत हँसनि हाय फाँसी पसराई ॥ भूषण सकल सुदेश सुहावन बसन झीन कटि पीत सुहाई ॥

धनुष बान लीन्हेकर कमलन मधुरअली मृग ठवनि लजाई ॥ ३० ॥ रा० जंगला ॥ सखि कब होइ हमार पति रामा ॥ ऐसन रूप सुना नाहिं देखा इनसम येइ सुखधामा ॥ जबते प्रीत लगी बनरेसों भूल्यो सकल घरकामा ॥ मधुरअली सब लाज छोडिकै बोलीं जनकपुरबामा ॥ ॥ ३१ ॥ रा० सिंध ॥ छबीलो छैला बनरा बिलोको मोरी बीर ॥ लाल पाग सिर पेंच लटपटी कलँगी रचि मणि हीर ॥ जुलुफ कृपान सानकी खैंची तकनि बकैंती तीर ॥ मधुरअली मृदु हँसानि दुनाली घाली दुसालति पीर ॥ ३२ ॥ रा० भोपाली ॥ बनी बनरेकी अजब छटा ॥ ऐसे अंग अनंग लजावन मानो श्याम घटा ॥ ब्याहबिभूषण सुभग सुहावन कटितट पीत पटा ॥ मधुरअली औंचक मैं देखी बैठी आजु अटा ॥ ॥ ३३ ॥ रा० खम्माच ॥ अली अलबेलो छयल

छलिया गलियामें मन मोह्या री आज ॥ जबते लषी लालकी सूरति भूलि गयो घरकाज ॥ ऐसो रूप अनूप मनोहर त्रिभुवनको सिरताज ॥ मधुरअली सब तजि सँग लगिहौं परै लोकमें गाज ॥ ३४ ॥ रा० इमनी ॥ सँवलियाके बांके बने दोउ नैन ॥ अनिआरे रतनारे कारे सैन सिरोहीते पैन ॥ ऐसे जुलुम जौंहरी जालिम चलत रहत दिन रैन ॥ मधुरअली कतलाम बाम सब बोलि न आवत बैन ॥ ३५ ॥ रा० सिंध ॥ सजनी बनरा हमें बस कीन्हों ॥ मिथिलापुरकी आय डगरमें रसवश करि मन लीन्हों ॥ तबते फिरति बावरीसी अब गुरुजन मैं नहिं चीन्हों ॥ मधुरअली अवधेशछयलपर लोकलाज तजि दीन्हों ॥ ॥ ३६ ॥ रा० भोपाली ॥ जनकनगर बिरहत दोउ भाई ॥ गौर श्याम सुखधाम मनोहर लषि लषि रूप अनंग लजाई ॥ सुभग चौतनी सीस

सुहावन झमकदार कलँगी छबि छाई ॥ कटिकी कसनि पीतपट नीकी तापर रचि तरकसी सुहाई ॥ धनुष बाण कर कमलन राजत ठवनि युवा मृगराज लजाई ॥ मधुरअली बिलोकि बर बांके थके परस्पर लोग लोगाई ॥ ३७ ॥ रा० इमनी ॥ बनरेपर आसिक आज भई ॥ जबते लषी छटा छबि बांकी तबते सुधि बुधि भूलि गई ॥ अब धन धाम काम नहिं भावै लोकलाज सब त्यागि दई ॥ मधुरअली मनहरन छयलकी मूरति मोरे दृगन छई ॥ ३८ ॥ रा० सिंध ॥ मजेसे क्या बनरा बनि आया ॥ मिथिलापुरमें आय सबनके चितवत चितहिँ चोराया ॥ ऐसो रूप अनूप मनोहर मृदु मुसक्याय छकाया ॥ मधुरअली अवधेशछयलको लषि बहु काम लजाया ॥ ३९ ॥ रा० सिंध ॥ लालकी अँखियां रसमें भरीं ॥ रतनारी कारी कृपानसी बांकी बाढ़ धरीं ॥ ऐसी

जुल्लुम जौंहरी जालिम मनमथमान हरीं ॥ म-
धुरअली लषि अलि मिंथिलाकी घायल बिकल
परीं ॥ ४० ॥ रा० भोपाली ॥ प्यारे बनरेकी न-
जर हिये सालैं ॥ करि कतलाम बाम यहि मगमें
तबते फिरति बिहालैं ॥ ऐसे नयन पयन जनु श-
रसे लागत बेर न घालैं ॥ मधुरअली तन तपनि
न जैहै बिन दशरथके लालैं ॥ ४१ ॥ रा० इम-
नी ॥ ललनबिन छिनभरि रहिबो न जाय ॥
जबते प्रीत लगी बनरेसों तबते कछु न सुहाय ॥
करि करि सुरति हँसनि बोलनिकी विरह अंग सर-
साय॥मधुरअली अतिबिकल विरहिनी कर मींजति
कहराय ॥ ४२ ॥ रा० झंझोटी ॥ सजनी रामकुँ
वरकी लागी नयनकी चोट॥ औंचक चितै दनि मैं
वहितन करि घूंघटकी ओटे ॥ तिरछी सैन सांगसी
लागी भई लोटमैं पोट ॥ मधुरअली अवधेश-
छयलकी नजर जहरकी कोट ॥ ४३ ॥ रा० कु-

ह्मार ॥ मनहरन छयल अलि हूब चलो सियवर छबि जोही रे ॥ सुभग चौतनी सीस सुहावै झमकदार कलगीं मन भावै ॥ मानिन जड़ित सिर पेंच वेस तपै क्या सोही रे ॥ जामां जबर जरकसी राजै फैंटा पीत कमर में छाजै धनुष बांन करकमल चलनि केहरि गति मोही रे ॥ मधुरअली बोलनि मृदुहांसी लिये रहत लालन या फांसी नाहि अब वचन देषाय हाय दोऊ नैंन सिरोही रे ॥ ४४ ॥ रा० गौडगिरी ॥ सजनी ऐसाबना वर बांका ॥ करि सिंगार सुभग सुषमानिधि अति मनहरन मजाका ॥ नैंन पयन जनु बांन मयनके मारत चोट अचाका ॥ मधुरअली नाहि बचव अलिनको परत गलिन विच डांका ॥ ४५ ॥ रा० चैतीगौरी ॥ हमारा मन रे मौह्यौ या वनरा ॥ माथे मौर मानिनमें राजै जुलुम करै सेहरा ॥ अँग अँग भूषन विविधि मनोहर मोतिनको गजरा ॥

मधुरअली छवि कहत वनै ना कहर करै कज
॥ ४६ ॥ रा० चैती गौरी ॥ नवल वनरा आंखौं
झूलै ॥ ऐसो रूप अनूप मनोहर सुरत नही भू
॥ मृदु मुस क्याय ताकि तिरछोहै सांग सरिस हु
॥ मधुरअली अवधेस छयल सम नाहि दूसर तू
॥ ४७ ॥ रा० इमनी भोपाली ॥ छयलपर आसि
आज भई ॥ देषति छटा अँटा पर बैठी सु
बुधि भूलि गई ॥ अलक मुख मंडल छुटिछई
मनहुँ मदतको जाल लाल लै वर वस फांसि ल
ई ॥ सयनदै वोलनि मधुर मई ॥ मंद चलनि
गजराज मस्ककी जनु छाति छीनि लई ॥ नेक
नहिँ लागत पलक दई ॥ मधुरअली कुल कांनि
छांड़ि कै नाचत थेई थेई ॥ ४८ ॥ रा० कलंगड़
॥ हाय हँसि डारी लाल मोरे फांसी ॥ औंचक
छैल गयल विच मिलिगे हे सषि ऐसो अवधको वा
सी ॥ तबते भोजन भौन न भावै ऐसी दसा नित

रहत उदासी ॥ मधुरअली सब तजि सँग जै हौं काकरिहै कोउ करिकै हांसी ॥ ४९ ॥ कलंगड़ा ॥ सियदुलहे पै भयौ मन राजी ॥ जबते लषीमें सांमल सूरति भई प्रीत अति ताजी ॥ लोक लाजकी अब डर नाही काकरिहै कोउ काजी ॥ मधुरअली कुलकांनि छांडिकै लागी तन मन वाजी॥ ५० ॥ रा० जंगला ॥ जुलुम करै अषियन बिच कजरा ॥ भूषन सकल सुदेस सुहावन कहर करै फूलनको गजरा ॥ ऐसो छैल छवीलो रसिया मजेदार प्यारीको वनरा ॥ मधुरअली छवि कहत वनै ना सजि सोहत मोहत मन हमरा ॥ ॥ ५१ ॥ रा० परज ॥ रामा मोरे आये हमारी गलियां ॥ गुरु आयसु लै गयौ वागमें टोरैं फुलनकी कलियां ॥ जुलफैं जुलुम जौंहरी मुषपर मानौ कामकी जलिया ॥ मधुरअली देषत भई घायल प्यारी जनकपुर अलिया ॥ ५२ ॥ रा० भोपाली ॥

आली आये वाग माहीं सलोने राजसुत दोई ॥ स्यांम गवर मनहरन छयल वर नहिँ उपमा कोई ॥ जो कौसिक मुनि संग सुने हम जांनि परत वोई ॥ मधुरअली कुलकांनि छोंडिकै पीतम मुष जोई॥५३॥रा० नटमलारी॥अली लालन मन मोहि लिया ॥ छवि क्या जुलुम किया ॥ औचक निहारी मनहारी छवि प्यारी भारी छैल सुखकारी धनुधारी तो सिकारी वीर मारि द्रिगतीर पीर करत करेजे वीच ऐसी दरद दिया ॥ सुभग सलोना लोना वांमकर फूल दोना भूपको ढटोना ऐसो होना न जगत मांहि ऐसो सुकुमार वाग वीचमें विहार किये सुंदर सियको पिया ॥ आलिगन थोरी थोरी वैसकी किसोरी संग पारवती पूजन को आंई हैं भरे उमंग मांगि वरदांन मन मुदित मधुरअली पाऊं पति स्यांम जिया ॥ ५४ ॥ रा० झंझौटी ॥ आली फुलवरिया में दुइ जने आये ॥

स्यांम गौर मन हरन छयलवर चितवत चितहिँ चोराये ॥ सुनि सषि वचन सिया हियहरषित मनहिँ महेस मनाये ॥ मधुरअली तेहि समै सुनै ना गिरिजा भवन पठाये ॥५५॥ रा० ईमन ॥ मनहरन अजव सिय प्यारी ॥ मृदु मुसक्याय छकाय हाय अव निमि कुलकी उजिआरी ॥ अव धौं भाय भेट कव होई सूरतिकी वलिहारी ॥ मधुरअली सुचि वचन लषनसों बोल्यौ अवधविहारी ॥ ॥५६॥ रा० झंझोटी ॥ वसी हिय नवल सिया सुकुमारी ॥ गजकी चाल तकनि मृदु विहँसनि सुषमानिधि पर वारी ॥ अलिगन मध्य महा छवि सरसत कोटि चंद उजिआरी ॥ मधुरअली करि प्रीत लषनसों कहत राम धनुधारी ॥ ५७ ॥ रा० झंझौटी ॥ सोभित सषिन सहित सिय प्यारी॥ गिरिजा पूजन हेत हरष हिय आय लगी देषन फलवारी ॥ मज्जन करि सजि वसन विभूषन करि

मृदु गांन मंद पगुधारी ॥ मधुरअली छबि छ
छवीली छिति मंडल छिटकी अतिभारी ॥ ५८ ॥
रा० ईमन ॥ पूजैं भवानी जात चली अलवेली सखि
न लै जांनकी ॥ मंद मंद पग धरति हरति मन षो
ड़स चंद समांनकी ॥ ऐसी छटा छवीली जगमे
लषि न परत कहुं आंनकी ॥ मधुरअली वेटी विदे
हकी होइहै वधू कुल भांनुकी ॥५९॥ रा० झंझोटी ॥
समैं जांनि मुनि वचन उचारे ॥ टोरि चाप परि
ताप जनकको भेंटहु रघुवर राज दुलारे ॥ सुनि
सुखमानि सहज उठिबैठे मंद मंद हँसिकै पगु
धारे ॥ मधुरअली नर नारि मुदित सब भटमांनी
भूपति हिय हारे ॥६०॥रा० झंझोटी ॥ रघुवर चाप
निकट चलि आये ॥ गजगन मध्य सिंघ ज्यौं
गाजत नृपन सभामें राम सुहाये ॥ रूप अनूप
देषि मिथिलापुर नर नारी सब सुकृत मनाये ॥
मधुरअली लषि देव समै सुभ सुमन बृष्टि करिकै-

सुष पाये ॥ ६१ ॥ देसराग ॥ अली कोउ कह-
त न हितकी बात ॥ अतिहिँ कठोर चाप संकर-
को राजकुँवर मृदुगात ॥ अति सुकुमार सील सु-
षसागर नयन मनहुँ जलजात ॥ मधुरअली सिय
वरनि हिये छवि परम प्रीत हुलसात ॥ ६२ ॥
रा०ईमन ॥ अति सनेह लषि जनक ललीको लाल
लिये सिव चाप उठाई ॥ करि दुइषंड डारि म-
हि ठाढ़े हरष विषाद न कछु उर आई ॥ अति
कठोर रव भयौ भुवनमें निज पराय अव कछु न
सुनाई ॥ जैजैकार भयौ नभपुरमें देवन सुमन
वृष्टि झरि ल्याई ॥ मधुरअली त्रिन तोरि नारि नर
सोच विहाय नयन फल पाई ॥६३॥ रा०झंझोटी ॥
अलिगन संग सियाके गावहिँ राग भली ॥ मृग-
नैनी कोकिल कलवैनी वहु रति मांन मली ॥
गजगांमिनि मनहरन वरन यक सोभा उमँगि च-
ली ॥ मधुरअली जैमाल लाल उर मेल्यौ जनक-

लली ॥ ६४ ॥ रागविहाग ॥ सषी सव गावहि मंगल गीत ॥ कहि मृदुवैंन सुनाय सियाको सोच गयौ सव वीत ॥ अव पद छुवो लली लालनके परसति नही सभीत ॥ मधुरअली रघुवर मन विहसत देषि अलौकिक प्रीत ॥६५॥ रा० सहांना ॥ भृगुकुल धनुस भंग सुनि आये ॥ सिवकोदंड षंड महिदेषत महाक्रोधकरि वचन सुनाये ॥ जनक जांनकी सहित समैते मुनि पद कमल सीस तिन नाये ॥ तब कौसिक मुनि राजकुमांरन जाय समीप प्रनाम कराये ॥ लषि मुषचंद चकोर चित्तकरि परसराम मुनि अति सुख पाये ॥ पुनि रिसाय कहि जनकरायसों सिवको चाप मूढ़ टोरवाये ॥ तब हँसि हेरि कहत रघुनंदन दास आपको चाप चढ़ाये ॥ वाद विवाद परसपर करि करि वहुत भांति मुनि आंषि देखाये ॥ मधुरअली दै वान सरासन परसराम तब बनहिँ सिधाये ॥

॥ ६६ ॥ रा० परज ॥ विनती सुनुनाथ हमारी ॥ कहत विदेह करौं सादर जो मरजी मोहिँ होई तुह्मारी ॥ भयौ विवाह चापके टूटे कह्यौ गाधिसुत लेहु विचारी ॥ लिषिपाती पठवाव अवधपुर महाराज राउर पगुधारी ॥ सोधि पत्रिका पठैदूतकर इहां महल पुर होई तयारी ॥ होई स्वयम्बर राम सियाको मधुरअली लषिकै वलिहारी ॥ ॥६७॥ रा० विहाग ॥ अवधपुर दूतगये सुष पाय ॥ सिंघ पँवरमें दूत षडेभे भीतर षवरि जनाय ॥ सुनि नृप तुरत नकीवनसों कहि लावहु दूत बोलाय ॥ दूत जाय सिर नाय पत्र दै लीनभूप हरषाय ॥ षोलि पत्रिका वांचि महीपति देह दसा विसराय ॥ मधुरअली नृप कहि वरात सजिचलो निसांन वजाय ॥६८॥ रा० झंझोटी ॥ नृपति समीप कुँवर दोउ आये ॥ अनुज समेत भरत सुषसागर महाराज पदमें सिर नाये ॥ आयसु पाय सषागन

सँगमें होइ सवार वाजी झमकाये ॥ मधुरअली सांनद सवार नृप चलत भये लै संष वजाये ॥ ॥ ६९॥रा० परज ॥ जनकपुर पहुँचिँ वरात गई ॥ सुनत विदेह लेन अगवानी पैठे समाज दई ॥ मिलत परसपर दो समाज क्या आनँद मोद मई ॥ मधुरअली जनवास वासदै पुनि पग धोई भई ॥ ॥ ७०॥ रा० सूरमलार ॥ कछु दिन वीते समै जानिकै वेला विमल विचारा ॥ लै लै नाम लली लालनको अलिगन गान उचारो ॥ करि नहछ्र दैपगन महाउर भूषन वसन सवांरो ॥ पढ़त पुरोहित दोहूं औरते मधुरअली वर चौक पधारो ॥ ७१ ॥ रा० झंझोटी॥अजब रंगीली झांकी वनी वनरे की ॥ जडित अमोल मोरमानि वारी जुलुम जलूस मजे सेहरेकी ॥ भूषन सकल सुदेस सुहांवन हृदय हिलोर सुमन गजरे की॥ जग मग जोति होति जामाकी ललित लदाउ गेर सगरे की ॥ नयन वि-

साल सोंन सरसिजसे कीहे कतल रेष कजरे-
की ॥ मधुरअली लषि हँसनि अलीगन नेक न
सुरति रही हमरे की ॥७२॥ रा० देवगिरी ॥ सजनी
वांका वना रघुरैया ॥ सिर सोनेदी मौर विराजैसे-
हरेकी छबि छैया ॥ व्याह विभूषन सुभग अंगमें
काजर दिगन सुहैया ॥ मधुरअली दुलहेकी छवि-
पर बार बार वलिजैया ॥७३॥रा० झंझौटी लोनो
वना लोनी सिय वनरी री ॥ मौरी मौर मनिन
दोहुनके वागो लाल चुरी री ॥ अंजन सहित
चारु चारिउ द्रिग देषि रूप मोह्यौ तन मन री ॥
स्वामी लाल लाड़िली भामिनि मधुरअली हमसे-
को धनरी ॥ ७४॥ रा० देसमलार ॥ वनरा सुभग
सिंगार करे ॥ माथे मौर मनिनमै राजै फूलनहार
गरे ॥ नयन कपांन जौंहरी दोनौ अंजन वाढ़
धरे ॥ मधुरअली कतलांम नारि नर मनमथ मां-
न हरे ॥ ७५ ॥ रा०ईमन ॥ मोरे मन वसिगयौ सां-

चल वनरा ॥ मनिन जड़ित सिरमौर मनोहर ता-
पर सुभग सुहांवन सेहरा ॥ कुंडल कांन कलित
मकराकृत कठुलाकंठ सुमनके गजरा ॥ आंषैं
सयफ सांनकी पैंची मधुरअली मारत जिय कज-
रा ॥ ७६ ॥ रा० भोपाली ॥ छवीली प्यारीको
वनरा ॥ जग मग मौर मनोहर माथे मोतिनमैं से-
हरा ॥ कौंन कवन छबि कहौं छयलकी वसीकरन
कजरा ॥ मधुरअली पुरवधू सराहैं जीवन धन
हमरा ॥ ७७ ॥ राग बहार झपताल ॥ आजु मिथि
लेस ग्रह मोद मंगलमई ॥ लसत सुत सहित
अवधेंद्र श्रीमुकुटमणि मनहुँ सुरराजकी सकल
सोभा छई ॥ अजव चिंत्तामनि जडित मंडफ
वन्यौ कह्यौ नहि जात विधि बुद्धि भोरी भई ॥
सुभग सुषकंद रघुचंद तेहि मध्यमें संग जेहि ज-
नकजा अमित छबि छैगई ॥ जडित मनि मौर त्यौं
मौरि मनकी हर निधिपति सिर सुसद जनु

प्रभा रविकी लई ॥ चूनरी चटक सोइ पीत प-
टकी कसे रसे दोउ रंगमे प्रीत अति सो ठई ॥
रतनते सहित वर व्याह भूषनभरे दामिनी मनहुँ
नभ त्यागि छितिमें रई ॥ कमलसे फूल द्रिग हूल
हियमें करैं कांमके तीर जनु वीर विजई जई ॥
जोहि मुषचंद कलगांन अलिगन करैं भावरी पर-
तमें जौन सोभा दई ॥ तौंन छवि कहत सकुचात
कविजन सबै नयन फल पायकै मधुरअलि छकि
गई ॥७८॥ रा०भोपाली ॥ व्याहन आयौ सिया-
वरको छबीलो यार या वनरा ॥ मनिमै मौर मो-
हनी माथे मोतिनमै सेहरा॥ कंकन कड़े जड़े कर-
सोहत मोहत मन हमरा ॥ मधुरअली आपैं क-
पान जुग वाढ़ वन्यौ कजरा ॥७९॥ रा० इमनी ॥
झांकी सुभग सिया वनरीकी ॥ मौरी मनिमै ज-
ड़ित जगामग तापर लहर चटक चुनरीकी ॥ श्री-
अवधेंद्र मुकुटमणि हरषत नेक न चाह और

धनरीकी ॥ मधुरअली लषि लाल तनक छवि नेक न सुरति रही तनरीकी ॥ ८० ॥ रा० परज ॥ सखी सिय दूलह अजब बना ॥ पनरथ मौर सुभग सेहरा सिर सुषमा सुखद घना ॥ बागो लाल पीत कटि फेंटा छवि सिंगार सना ॥ मधुरअली लहि लोचन लाहू लषिकै प्रान धना ॥ ८१ ॥ रा० परज ॥ वेसीं वनी बनरेकी सूरति ॥ ऐसी छवि छवि कहै कवन विधि लषि लजात अति कामकी मूरति ॥ काह कहौं कुछ कहत वनै ना थकित भई मेरी सब गति मति ॥ मधुरअली कुलकांनि छोड़िकै राम कमल पदमें लागी रति ॥ ८२ ॥ रा० कुह्यार ॥ मैं छोड़ि लोक कुललाज आज लालन सँग जावै रे ॥ मृदु मुसक्यानि लषी मै जबते छाकि गई बनरेकी छबिते नींद परै नहिँ रैंन चयन कैसेकै भावै रे ॥ पनरथ मौर सेहरो सोहै देषि देषि अतिही मन-

मोहै वागो लाल सुदेस वेस कंकन छबि छावै रे ॥ मधुरअली श्रीराज दुलारो होत नहीं नैननते न्यारो चितवत लियौ चोराय हाय मनमथहिँ लजावै रे ॥ ८३ ॥ रा० परज ॥ छयल सियवर क्या अजब सजा ॥ लसत मंडफतर करत मजा ॥ मौर मनि मानिक जडित वनी ॥ लसै सिर सोभा सुभग घनी ॥ सुहांवन मजेदार सेहरा ॥ हिये हलकत मोतिन गजरा ॥ छटा पनरथकी छाय रही॥छबीले छवि नहिँ जात कही ॥ चसम दोउ काजर कहर करैं ॥ हँसानि बोलनि मन कांहिँ हरैं ॥ सखद झांकी हैं बर वाकी ॥ देखिकै मधुरअली छाकी ॥ ८४ ॥ रा० झंझोटी ॥ याछबि वरनि सकै कवि कोरी ॥ अति मनहरन छयल रघुनंदन तैसहि जनक किसोरी ॥ गौर स्याम सुखधाम मजेसे रतिपतिको मद मोरी ॥ मधुरअली त्रिन तोरि विलोकति चिरजी रहै यह जोरी ॥

॥ ८५ ॥ रा० परज ॥ आली बनरेकी छटा छबि खांसी ॥ जग मग जोति मोति मानिक लै तेहि मै मौर प्रकासी ॥ तापर जुलुम जोर सेहरेकी अतिसुखमाकी रासी ॥ काजरभरे वाँक दृग दोनौ मधुरअली सरगासी ॥ ८६ ॥ रा० देस ॥ छबीलो छयल अवध वनरा सखी मन मोहि लियो हमरा ॥ मौर सिर सुभग मानिन वारी ॥ श्रवण दोउ कुंडल छबि न्यारी ॥ भालमें लगी षौर खांसी मनौ सोभा सब हइ फांसी ॥ मोतिनको सेहरा सज्यौ सोभा अमित अपार ॥ वा हलकनि हियमें बसी ना सुधि रहत सह्यार॥ सुहावन फूलनको गजरा ॥ जरकसी घेरदार जामा कसे कटि कमरबंद कामा ॥ प्रभा पनरथकी अति नीको सदा दै वसीकरण जीकी॥ अलकैं ललित कपोलमें छूटि रहीं दुहुँओर ॥ नागिनिसी जनु जुलुम करि डसे लेत मन मोर ॥ नहीं मै कहौं बचन अजरा

विभूषन जानैं जहाँ चाही ॥ लसै सुषमा त्यों अवगाही ॥ बचन मृदु कहत सुधा बरसै ॥ सुन-तमें महामोद सरसै ॥ मधुरअली सियको बना, छटा बरनि नहिँ जाय ॥ हाय कहै कवि कौन अस, लखि बहु मदन लजायँ ॥जौंहरी अँखियनमें कजरा ॥ ८७ ॥ रा० देश ॥ छयल यहि गैल आज आया ॥ छबीली छबि क्या दरसाया ॥ मौर अति सुभग सीस सोहै ॥ जड़ित मनि मा-निक मन मोहै ॥ कुंडल दोउ कानमें हलकैं ॥ कामकी मनहुँ मीन छलकैं ॥ ब्याह विभूषन अंगमें, लसत सुदेस बहार ॥ छटा छिटिकि छि-तिमें रही, सुषमा आमित अपार ॥ रूप लषि सब के मन भाया ॥ कमल कर कड़े बड़े राजैं ॥ माल मोतिनके उर भ्राजैं ॥ तूण कटि कसानि पीत पटकी ॥ मंदगति गालिम हिय खटकी ॥ कमल नयन बांके बड़े, मनहुँ मयनके बान ॥ सातभरे

घायल करत, भृकुटी पाय कमान ॥ बाढ़ कजरे की धरि लाया ॥ अवधको अजब बीर रसिया ॥ मजेसे सबको दिल फाँसिया ॥ नहीं कहुँ अस छबि देखि परै ॥ कहै कवि कैसे बुद्धि हरै ॥ हँसनि हाय चितकी फँसनि, वचन अमी बरसाय ॥ मधुरअली तृण तोरिकै, बार बार बलि जाय ॥ सखी सिय दूलह भल पाया ॥८८॥ रा० परज ॥ सियदुलहेकी बनी छबि जौन ॥ कोटिन काम निछावरि वाकी बरनि सकै कबि कौन ॥ ब्याही अनब्याही हँसि शोचत, गवनेकी रहि मौन ॥ मधुरअली सुरबधू सराहैं छकीं आय नृपभौन ॥ ८९ ॥ रा०इ० भोपाली ॥ अलीगन गावत मुसक्यातीं ॥ चारिउ कुँवर कुँवरि चारिउ जन, लै कोहवर जातीं ॥ अजब छबि कहैं कवन भांतीं ॥ उमा रमा राति सहित चार करि, लषि लषि हरषातीं ॥ महलमाधि मोद न कहि जातीं ॥

सखी लेवाय चलीं जनवासे छिन छिन हुलसातीं नगारन धुधकारी मातीं ॥ मधुरअली आनंद मगन सब सरसत दिन रातीं ॥ ९० ॥ रा० सूरमलार ॥ राम कुँवर मिथिलेशकिसोरी चितवनमें चित चोरी ॥ जनकमहल मंडफतर राजत छबि सिगाँर यकठौरी ॥ सुभग शीस सिय लसति चूनरी तैसहि पीत पिछौरी ॥ ब्याह विभूषन भूषित अंगन रतिपतिको मद मोरी ॥ रतनारी कजरारी आँखैं हँसानि सुधारस बोरी ॥ ब्रह्मादिक सुर सुमन बरसि कहि चिर जीवै यह जोरी ॥ लखि शोभा करि प्राण निछावरि मधुरअली तृण तोरी ॥ ९१ ॥ रा० देश ॥ लाल दशरथको बर बांका ॥ छयल बनरा छबिमै छाँका ॥ मोर मनि रतनसहित साजी ॥ देखि मन होत सबन राजी ॥ कान कुंडल दोउ दिशि झलकैं ॥ अलक अँतरनसों क्या छलकैं । केसर

भाल विशालमें, खौर महा छबि देत ॥ शोभा सुंदर अति बनी, देखत मन हरि लेत ॥ नारि नर सबको चित छाका॥ जरीको जामा अजब सजा॥ कसनि कम्मरकी करति मजा ॥ झलाझल पनरथकी जोती ॥ लगे जहँ जबरदार मोती ॥ कड़े जड़े करमें परे, कंकन सुभग सुदेस ॥ ब्याह विभूषन अंगमें, अति सुषमानिधि वेस ॥ देखिकै काम चकित ताका ॥ नयन दोउ रतनारे कारे ॥ बानसम जुलुमदार वारे ॥ दुनाली हँसानि हाय ऐसी ॥ लगेते बचै कौन कैसी ॥ मधुरअली मिथिला नगर, कुँवर सकल वश कीन ॥ दै झांकी बांकी भली, लीन अपनपौ छीन ॥ सहर सबमें परिकै डांका ॥ ९२ ॥ रा० रेखता देशका ॥ सखी सियवर बनरा कैसो ॥ आलिन मनहरन अजब ऐसो ॥ मौर शिर लसत प्रकाश करै ॥ मनिनते जड़ित तिमिरको हरै ॥ झमक

सेहरेकी आति नीकी ॥ कान कुंडल भावन जीकी अलककी छलक कपोलनमैं ॥ वचन मृदु कहत अमोलनमै ॥ हँसनि हमका अहै फांसी ॥ नहीं छूटब है आति गांसी ॥ नयन जनु पयन कृपान करे ॥ रेख कजरेकी बाढ़ धरे ॥ सिकारी अजब छयल बांका ॥ जनकपुर पऱ्यो आय डांका ॥ कऱ्यो कतलाम राम बामा ॥ मधुरअलि बिसऱ्यो धन धामा ॥ ९३ ॥ रा० इमनी भोपाली ॥ सांझसमै अवधेश कुँवरकी देखु सखी क्या आवनकी रे ॥ अनुज सखा सँग सजे मजेसे चढ़े तुरँग झमकावनकी रे ॥ रंगभरे बतरात परस्पर हाय जुल्लुम मुसक्यावनकीरे ॥ मनिनजड़ित शिर मौर मनोहर सेहरा मनहिँ छकावनकी रे ॥ अलकैं ललित कपोलन झलकैं लषि बहु मदन लजावनकी रे ॥ अंजनसहित नयन रतनारे मानहुँ तीर चलावनकी रे ॥ ऐसी छबि

प्यारे दुलहेकी देखत मोद बढ़ावनकी रे ॥ मधु-
रअली सियमातु आरती चली करन मनभाव-
नकी रे ॥ ९४ ॥ रा० इमनी ॥ चलु सखि देखु
छयल मन हरिया ॥ सियवर वीर तीर धनु लीन्हे
अस छबि लषि न परत दिल भरिया ॥ लषन
किशोर बंधु बर सँगमें करत बिहार जनक-
फुलवरिया ॥ मधुरअली सुनि बचन सखीके सिय
मन होत चलौं यहि घरिया ॥ ९५ ॥ रा० झंझो-
टी ॥ अलबेला छयल सांवला मेरे मनको बस
किया ॥ चस्म कटारी मारि मेरे दिलमे दरद
दिया ॥ तबहींते घायल हाय री मेरा जातहै
जिया ॥ मधुरअली जीना नहीं पाये बिन सिय-
पिया ॥ ९६ ॥ रा० भोपाली ॥ सखी सियको
सजन प्यारा ॥ दिलौंते होत नहिँ न्यारा ॥
सुरति अब हाय नहिँ भूलै ॥ सांवलो रूप दृग
झूलै ॥ छटा छबि छयलकी बांकी ॥ लखी म

जबैते छाकी ॥ नयन दोउ मयनके तीरे ॥ करेजे लागि दै पीरे ॥ हँसनि मृदु बोलनि अतिखांसी ॥ मेरे जनु प्रानकी फांसी ॥ जौंहरी जुल्फ वदन झलकैं ॥ चस्म मेरे देखनको ललकैं ॥ सलोना अवधको लाला ॥ मधुरअली जेंहिँ मोही बाला ॥ ९७ ॥ रा० झंझोटी ॥ लालकी जुलफै जुलुम करैं ॥ घुँघुआरी कारी अति प्यारी छूटि कपोल परैं ॥ मुखसरोजमकरंदपानको जनु अलि आनि गिरैं ॥ मधुरअली भीजीं अँतरनसों रसिकनप्रान हरैं ॥ ९८ ॥ रा० बिहाग ॥ छयल छबि हृदयबीच खटकी ॥ सुभग पाग सिर पेंच जड़ित मनि कँलगी क्या लटकी ॥ बसन विभूषन ललित मनोहर कमर पीतपटकी ॥ मधुरअली नैंननमें झूलत द्युति नागरनटकी ॥ ॥ ९९ ॥ रा० बिहाग ॥ मनोहर मूरति सियबरकी जबते लषी जकीसी डोलति भूली सुधि घर-

की ॥ भृकुटी बर मनहुँ चाप हरकी ॥ तेहिमें साजि कतल अतिकीन्हे मनहुँ मारशरकी ॥ हँसनि फांसी कैयक लरकी ॥ कसी गले गालिम नहिँ छूटै नहिँ उपाय करकी ॥ तजी कुल लोक लाज डरकी ॥ मधुरअली कैसे उडि हेरौं हाय बिना परकी ॥ १०० ॥ रा० हरषन ॥ जैसे सिय सुकुमारि सुभग अति तैसहि रामकुँवर वर बांका ॥ श्रीमिथिलेश महल मंडफतर छबि सिंगार जनु करत मजाका ॥ बसीकरन दोउरूप मनोहर चित हरिलेत जबै जेहिँ ताका ॥ मधुरअली वाछटा छबीली लखे न रहत लाज कुल ढांका ॥ १०१ ॥ रा० परज जंगलापीलू ॥ जेवँनहेत लाल रघुनंदन जनकभवन चलि आये ॥ भरत लषन रिपुदमन सहितसब भूषन बसन बनाये ॥ लखि मुखचंद चकोर अलीगन ललकि नयनफल पाये॥ मनिमय जडित सुभग सिंहासन तेहिपर लै

बैठाये ॥ तोरि तोरि तृण ताकि सुनैना प्रेमवारि दृग छाये ॥ करन कलेऊ राजकुमारन सखियन तुरत उठाये ॥ पग पखारि बैठाय पाटपर सरस सनेह बढ़ाये ॥ पंचपात्र गंगाजल गडुवा दहिने ओर धराये ॥ तब सुआर पनवार पानि लै हरषि हरषि उठि धाये ॥ परुसन लगे छके छबि देखत नीतिनिपुण गुण गाये॥ओदन पहिती सरपि सुरभिको बटक बोरि दहि लाये ॥ रिकवँछ औ रसाज लै खँडुई कतरा सरस सुहाये॥बूंदी बरी कढ़ीकी बोरी पीतरंग मन भाये ॥ तरकारी अति रुचिर रायतो मधुर सवाद बनाये ॥ सौरभसहित सधाँन भांतिके कैयक सोइ परसाये ॥ फुलकां मिहीं भिजाये घीके थारन विशद धराये ॥ पपरी पापर पूरी कचौरी सघृत मसालन छाये ॥ लड्डू पेरा सरस जलेबी खाझा झीन बनाये ॥ मिसिरी कंद मिलाय मसाले दूध औटिकै लाये ॥ यहि-

विधि परुसि सुआर जोरि कर बिनवत बचन सुनाये ॥ सुनि सुख मानि सुवन दशरथके पंच कवर करि पाये॥जेंवत जानि जंत्र कर लैकै सखियन गान सुनाये ॥ ऐसी रीत लाल तुम्हरे कुल कहत सुनत सकुचाये ॥ पतिको काम नहीं है येकौ खीर खाय जब जाये ॥ शांता बहिनि तुम्हारि सुभग अति तपसिनसंग पठाये ॥ कुलके जोग काज नहिँ कीन्हो कौनौ दोष लगाये॥ नायल नारि अवधकी ऐसी नहिँ निजपति मनभाये ॥ तेहिते दिह्यो पठाय जनकपुर उन्हैं योगपति जाये ॥ व्यंग बचन सुनि राजकुँवर सब ताकत मृदु मुसक्याये ॥ हास विलास महलमधि माच्यो कहत कबिन सकुचाये ॥ अँचवन करि लै पान मसाले अँतर सुगंध लगाये ॥ देखत बनत टरत नहिँ अब चित मधुरअली हरषाय ॥ १०२ ॥ रा० पील्ह ॥ अँचवत रंगभरे

पिय प्यारी ॥ रतनरचित चौकीपर राजत छबि रतिपति मनहारी ॥ छबि लषि छकी सखी अँचवावत मानिनजड़ित कर झारी ॥ मधुरअली अँचवन दोउ करिकै सुभग सेज पगु धारी ॥ १०३ ॥ रा०कलँगड़ा॥देखो आली बनरा अजब बनि आया रे ॥ देखतही मन भाया रे ॥ मौर मनोहर मनिमय माथे मोतिनलर लटकाया रे ॥ सेहरा सुभग बरार किहे अति कलँगी क्या झमकाया रे ॥ ब्याह विभूषण जड़ित रतनमें अंगनमें छबि छाया रे ॥ पान पाय बोलत मन मोहत हँसनि फांसि पसराया रे ॥ कमलनयन बाँके कृपानसे अंजन बाढ़ धराया रे ॥ कतल करत नहिँ बचत नारि नर ऐसी कहर मचाया रे ॥ जावक चरणसरोज जुल्लुम करि मधुरअली अपनाया रे ॥ १०४ ॥रा० झंझोटी ॥ देखु सखी बनरेकी छबि प्यारी ॥ ब्याह विभूषन भूषित अंनग माथे मौर

सुभग मानिवारी ॥ गुंज गोफबिच कठुला सोहत कंकन कड़े कमलकर धारी ॥ कुंडल कलित कान रतननते अंगद गजब भुजा दोउ भारी ॥ बागोलाल झमक पनरथकी कटि फेंटा कसि पीत समारी ॥ मधुरअली दृग जुलुम जौंहरी अंजन बाढ़ धरी तरवारी ॥ १०५ ॥ रा०कलँगडा मोहीरे सियबर लषि झांकी ॥ मानिमय मौर सुभग शिर सोहत है सेहरेकी क्या छबि बांकी ॥ जामा अरुण पीत कटि फेंटा है पनरथकी लसानि मजाकी ॥ नयन कृपान बाढ़ कजरेकी मधुरअली घायल जेहिँ ताकी ॥ १०६ ॥ रा०परज ॥ हो बनरा छयल बनि आया ॥ देखतही मनभाया ॥रतन रचित शिर मौर मनोहर सेहरा अति छबि छाया ॥ जुलफैं जुलुम छूटि मुखऊपर कुंडल क्या झमकाया ॥ कड़े बड़े करकमलनमाही कंकनलर लटकाया ॥ जामा लाल पीत सोइ फेंटा

पनरथ सुभग सुहाया ॥ धनि धनि भाग सिया दुलहीकी अस दूलह बर पाया ॥ मधुरअली विधुवदन विलोकत कोटिन मदन लजाया ॥१०७॥ रा० भोपाली ॥ सिया प्यारी जीवन प्रान हमारी ॥ सुखकी करनि हरनि सब दुखकी निमिकुलकी उजिआरी ॥ बतियाँ मधुर सुधा जनु बरसत हँसानि फँसानिपर वारी ॥ नयन बड़े बाँके अनियारे सैन सांगसी मारी ॥ रूप अनूप अजब छबि देखत मोहत अवधविहारी ॥ चरणसरोज सुभग सुषमानिधि मधुरअली बलिहारी ॥ १०८ ॥ रा० भोपाली ॥ शरण तोरी आँयो जनककिशोरी ॥ करुणाशील सनेहकी सागर बचन अमीरसबोरी ॥ शरदचंदसम वदन मनोहर छूटि छटा चहुँ ओरी ॥ मधुरअली लषि लेति बलैया बार बार तृण तोरी ॥ १०९ ॥ रा० झंझोटी ॥ देखो मुख नीको प्यारी सीको ॥ आँनदकँद मनोहर छबिनिधि

अति सुंदर बिधु लागत फीको ॥ उपमा अजब कहत कबि सकुचत नहिँ पटतर इनकी जगती को ॥ सुखको सदन दमन सब दुखको मधुरअलीके जीवन जीको ॥ ११० ॥ रा० इमनी भोपाली ॥ रामकुँवर बनरा साखि सुंदर चढ़े तुरँग झमकाया है ॥ मीठे बैन सुधा जनु बरसत हँसनि सोहाय फँसाया है ॥ नयन कृपाण जुलुमवारे हैं अंजनबाद धराया है ॥ मधुरअली सियवर बांकाको लषि मनसिज सकुचाया है ॥ १११ ॥ रा० सिंधुखम्माच ॥ नयन सयनकी सांग हो प्यारे काहे मारे रे ॥ हे सुखसदन सुजान सांवरे दशरथराजदुलारे रे ॥ तबते हाय दरद अति मोरे अँग अँग शिथिल हमारे रे ॥मधुरअली अति पीरके मारे दोउ दृग बहत पनारे रे ॥ ११२ ॥ रा० सिंधु ॥ मौर मनिवारी सुभग सुखका बना धनुधारी सियाको पिया हो ॥ केसरतिलक भाल रुचि राजै हो

वांके नैन विशाल लाल अनिआरे अंजनते कारे देखि सखि प्यारे चित चोरि लिया हो ॥ कुंडल श्रवण सुखद सुषमानिधि हो जुलफैं छूटि कपोल कतल अति कीन्ही अँतरसो भीनी काम छबि छीनो जुलुम किया हो ॥ ब्याह विभूषन भूषित अंगन हो जग मग जोति प्रकाश छटा अति बांकी बनी क्या झांकी देखिकै छांकीं सकल तिया हो ॥ मधुरबोल मृदु हँसनि बसी है हो ॥ मधुरअली सँग जाब रहब नहिँ भावै कोउ केतौ समुझावै लाज जरिजावै मनैमें दिया हो ॥ ११३॥ रा० भोपाली ॥ सियबर क्या बांका सिकारी ॥ मिथिलापुरमें आय सखीरी मारि दृगौंकी कटारी ॥ ऐसो हाल लाल करि डार्‍यो बच्यो नहीं नर नारी ॥ मधुरअली अति कहर परी है दुसह पीर उर भारी ॥ ११४ ॥ झंझोटी ॥ रसिया प्यारा अवधविहारी ॥ अतिमनहरन सुभग सुखसागर

नैनबान हँसि मारी ॥ तबते धाम काम सब बिसर्‍यो घायल बाल बिचारी ॥ मधुरअली कुलकानि गई सब भै प्रीतमपर यारी ॥ ११५ ॥ रा० कलँगडा ॥राम प्यारेकी झांकी मजाकी ॥ऐसी छबि है काकी ॥ मृदु मुसक्यानि गजब मनमोहनि तकानि तीरसी बाँकी ॥ देखत छटा छयलकी सजनी लाज रहाति नहिँ ढाँकी ॥ मधुरअली महबूबखूबपर तन मनतैं मै छाकी ॥ ११६ ॥ रा० कलँगडा ॥ सियप्यारीकी छबिपर वारी ॥ शोभा बनी है भारी ॥ वदनचंद सुखसदन सुभग अति अलक झलकि रहि कारी ॥ बेसरिकी है बहार वदनपर नासा बुलाक मनहारी ॥ बचन मीठ जनु बरसि सुधारस हँसानि फाँससी डारी ॥ नयन पयन क्या तकनि तीरसी लषि छकि अवधबिहारी ॥ मधुरअली लै चमर चलावति प्राण करत बलिहारी ॥ ११७ ॥ रा० कलँगडा ॥ सिय-

प्यारी बदनपर मैं वारी ॥ कोटि चंदकी प्रभा लजावनि अलकैं बिथुरि रहीं कारी ॥ नासामें बेसरि बुलाककी छिटिकि रही शोभा भारी ॥ मनिन जड़ाऊ श्रवण विभूषण दामिनिकी द्युति उजिआरी ॥ सीस चंद्रिका सुभग मनोहर बेंदी भालपर छबि न्यारी ॥ मधुरअली मृदु हँसनि देखिकै तोरति तृण करि बलिहारी ॥ ११८ ॥ रा० सोरठ ॥ सियमुख अलक छूटि छबि देत ॥ अंतरभरी कारी कृपानसी देखत मन हरि लेत ॥ मानहुँ बचन चंदरसके हित नागिनि करि अतिहेत ॥ मधुरअली करि प्रीति जाति कै सुखकी सदा निकेत ॥ ११९ ॥ रा० घाटो ॥ सखि दोउ नवल अजब मनहरिया ॥ तैसहि राजकुँवर सुषमानिधि सोइ सिय जनकदुलरिया ॥ करि सिंगार लसत सुखसागर जनकराय फुलवरिया ॥ मधुरअली तृण तोरि बिलोकति प्राण कराति

बलिहरिया ॥ १२० ॥ रा० घाटो ॥ सखि साजि कुँवर कुँवरि दोउ आये मोरे रामा रे ॥ मनिमै भूषन जड़ित मनोहर अंग अंगमें छबि छाये ॥ हेरत हँसत परस्पर हिलिमिलि रतिमनमथहिँ लजाये ॥ मधुरअली जोहत मन मोहत दृगन लाहु अति पाये ॥ १२१ ॥ रा० भोपाली ॥ देखु सखी झांकी क्या बांकी अतिप्यारी प्यारे बनरेकी ॥ अजब अनूप छयल नटनागर काम निछावरि सवँरेकी ॥ सीस मौर मणि जड़ित जगामग तापर छबि है सेहरेकी ॥ जामा घेरदार जरबीला कटि फेंटा पट पियरेकी ॥ कंकन लसत कमलकरमाहीं गजमोती हिय गजरेकी ॥ ब्याहाविभूषण भूषित अंगन छटा छिटिकि रहि सगरेकी ॥ मधुरअली अलियन करि घायल नयन रेख वा कजरेकी ॥ सियको दूलह गजब अतूला लखि सुधि रहति न जग हमरेकी ॥ १२२॥

रा० देश ॥ सुनौ तुम यार ननँदोई ॥ तुम्हैं बिन रहब कस होई ॥ तिहारे नैंन रतनारे ॥ बाणसम हाय हँसि मारे ॥ तबैते पीर नहिँ भूलै ॥ हमारे करत हिय शूलै ॥ तुह्मैं लषि प्रान हैं तनमैं ॥ विचारो आपही मनमैं ॥ सुरति करि भोजिये पाती ॥ विनै अब करौं कौन भांती ॥ विरहके सुनत मृदु बैंना ॥ लालके भरे हैं जल नैंना ॥ सभै नहिँ काहि सकत कोऊ ॥ मधुरअलि प्रेममैं दोऊ ॥ १२३ ॥ रा० झंझोटी ॥ अब कब लाल जनकपुर ऐहौ ॥ आपन वदन देखाय चंद्रसम मृदु मुसक्याय बतैहौ ॥ हे मनहरन प्रान जीवन धन नर नारिन सुख दैहौ ॥ मधुरअली नागर सुखसागर बिछुरनतपनि बुझैहौ ॥ १२४ ॥ रा० देश ॥ तुह्मैं बिन ना मन धीर धरै ॥ ऐसी लगानि लगाय लाल हँसि कौन उपाय करै ॥ सुनत अवधकी अवासि जवाई नैन-

न नीर झरै ॥ मधुरअली मुख बोलि न आवत विरहके ज्वाल जरै ॥ १२५ ॥ रा० पीलू ॥ रोंके आज न रहबै ललन संग जावै ॥ जो कोउ हमसे छेंड़ करै सखि तापर विष हम खावै ॥ ऐसी प्रीत लगी बनरेसों छिन पल कछु न सुहावै ॥ मधुरअली अवधेश छयलबिन को मोरी तपनि बुझावै ॥ १२६ ॥ रा० पीलू ॥ जात अवधपुर प्यारे प्रीतकी फांसी डारे ॥ अब कैसे हम रहब तुह्मैं बिन दशरथराजदुलारे ॥ रसबश करि मुसक्याय मजेसे नैनबाण पुनि मारे ॥ मधुरअली महबूब मोह करि अब कस हाय बिसारे ॥ १२७ ॥ रा० देश ॥ लाल तुह्मै बिन जियरा धरत न धीर ॥ अब कब हाय जनकपुर ऐहौ हरिहौ सबकी पीर ॥ सुनि सरहजके बचन विरहके पुलकावली शरीर ॥ मधुरअली नागर ननँदोई जात मारि दृग तीर ॥ १२८ ॥ रा०

जिला ॥ जात चले प्यारे प्रीति लगाये ॥ अब कस हाय तुम्हैं बिन रहबै सुरति नहीं हमरी बिसराये ॥ अबलगि लाल महासुख दैकै रसवश करि क्या बतियां बताये ॥ मधुरअली सरहजकी बानी सुनि सुख मानि नयन जल छाये ॥ ॥ १२९ ॥ रा० इमनी ॥ तलफत प्रान तुम्हैं बिन प्यारे ॥ हे सुखसदन यार ननँदोई महाराज दशरथके बारे ॥ दरदहरण नागर गुणसागर होहु न दृगते न्यारे ॥ मधुरअली या हाल लाल करि जात अवध जिय जारे ॥ १३० ॥ रा० गौड़ागिरी ॥ बनरे फांसी प्रीतकी डारे ॥ तेहिपर भौंह कमान खैंचिकै नैन साजि शर मारे ॥ ऐसी हाल हाय हँसि करिकै अब तो अवध सिधारे ॥ मधुरअली अब जियब कठिन है तुमबिन प्रानपियारे ॥ १३१ ॥ रा० भैरवी ॥ लालबिन हाय नहीं रहि जाय ॥ कीजे कौन उपाय ॥ औंचक

मिल्यो मोहिँ सखि मगमैं मोतन मृदु मुसक्या-
य ॥ ऐसो हाल बिरहके मारे अंग न दरद
समाय ॥ तबते फिरति बावरीसी अब घर बन
कछु न सुहाय ॥ करिकै सुरति श्यामसुंदरकी
नैन नीर बरसाय ॥ मधुरअली कोउ आनि
मिलावै लेती कंठ लगाय ॥ १३२ ॥ रा० भैरवी ॥
रसिया राम कुमार आज हँसि कहँ धौं हाय
गयो ॥ मारि नैनके बाण हियेबिच फेरि न
खबरि लयो ॥ छिन पल कल न परै सजनी री
ऐसी दरद दयो ॥ मधुरअली महबूब मिलेबिन
अब हठि मरब भयो ॥ १३३ ॥ रा० झंझोटी ॥
सजनी राम कुँवरके बांके नयन रसजोर ॥ अनि-
आरे रतनारे जलजसे शरसम करि हियफोर ॥
चलत रयन दिन धीर धरत नहिँ टोर घोर
अतिशोर ॥ मधुरअली जेहि लगैं सो जानै लषै
मोर नहिँ तोर ॥ १३४ ॥ रा० इमनी ॥ मोह्यो

मेरा मन अवधबिहारी ॥ औचक मिल्यो अली गलियनबिच तिरछी तकानि जनु मारि कटारी ॥ ऐसो हाल हाय करि नटिगो रसिया बांका गजब सिकारी ॥ तबते दरद गरद अति कीन्हे कर मींजति दृग बरसत बारी ॥ नहिँ सुहात अब धाम काम कछु सोचति पुनि चढ़ि जात अँटारी ॥ मधुरअली या दशा लालबिन तन मनकी सब सुरति बिसारी ॥ १३५ ॥ रा० झंझोटी ॥ पैयां परौं मै अवधके सैयां ॥ करौ न हमसे लाल लरिकैयां ॥ अब जो भई भई सो प्यारे कीजै नहीं काल्हिकी नैयां ॥ बिनती सुनौ सही अब मेरी हे दिलदार लषनके भैया ॥ मधुरअली ऐसो डर लागत खीत्री मोहिँ सुघर मैयां ॥ ॥ १३६ ॥ रा० परज ॥ अब कब हमरी खबरि लैहौ लाल ॥ तकानि तीर हँसि हाय मारिकै जात किहे हिय साल ॥ हे दिलदार दरद निज

जानौ तुमबिन बिकल बिहाल ॥ मधुरअली कबहूं मुख देखब नैनन करब निहाल ॥ १३७ ॥ रा० जंगला ॥ सियवर सांची कहौ कब ऐहौ ॥ मृदु मुसक्याय पाणि प्यारे गहि तनकी तपनि बुझैहौ ॥ नेह निबाहि ननँदके नाते पुनि पुनि खबरि पठैहौ ॥ मधुरअली नागर ननँदोई सरह-जकी सुधि लेहौ ॥ १३८ ॥ रा० परज ॥ तेरि नजरौंदी सयफकी धार ॥ सुनिये अवधछयल दशरथके घायल करे हजार ॥ लोट पोट तिय चोटके मारे मिथिला सहर बजार ॥ मधुरअली कहिये पिय सांची ऐहौ कब दिलदार ॥ १३९ ॥ रा० ईमन ॥ प्राणपियारे चलन अब चहते ॥ चलैकी साज साजि सब भूपति जहँ तहँ लोग सबन मिलि कहते ॥ पाती आई अवधनगरते ताते राजकुँवर नहिँ रहते ॥ मधुरअली नर नारि जनकपुर शोचबिबश ब्याकुल दृग बहते ॥१४०॥

रा० झंझोटी ॥ माता मोरि बिनै सुनि लीजै ॥ महाराज पठयो राउरढिग बिदाकी अज्ञा दीजै ॥ निजसुत जानि सदा हमरेपर कृपादृष्टि अब कीजै ॥ मधुरअली सुनि बचन रामके सिया मातु कर मींजै ॥ १४१ ॥ रा० इमनी ॥ लिये सिय गोद सुनैना रानी ॥ शोचभरी सुसकाति मुख निरखाति बहत दृगन दोउ पानी ॥ गद गद कंठ बचन हितके कहि मनहुँ अमीरस सानी ॥ मधुरअली मिथिलेशमहलमें बिरह न जात बखानी ॥ ॥ १४२ ॥ रा० झंझोटी ॥ सजनी लालबिना हमकैसे कै राखब प्रान ॥ बाजे बजत कूचके सुनि सुनि लागत हिय जनु बान ॥ नहिँ भावत धन धाम सखी री बिसर्‍यो सबन अपान ॥ मधुरअली नृप भोर जाँयगे अवध बजाय निसान ॥ ॥ १४३ ॥ रा० देवगिरी ॥ प्यारे तेरे बांके नयन कसकनियां ॥ ॥ सानदार सहजोर बानसम

भौंहैं मानौ कमनियां ॥ करि कतलाम तमाम जनकपुर ना सुधि रहति अपानियां ॥ मधुरअली घायाल भल कीन्हो पहुँचावै को कनियां॥१४४॥ रा० झंझोटी ॥ अवधछयलकी बांकी है नजरिया ॥ कहर करै मानौ कठिन कटारिया ॥ करत दुसाल हाय अलियनउर घायल परी हैं विकल बजरिया ॥ गरद भई सब दरदके मारे हैं मारे जाब सही यहि घरिया ॥ मधुरअली है यतन जियनकी जो मिलि जाय लाल दिलभरिया ॥ ॥ १४५ ॥ रा० झंझोटी ॥ कैसे कै राम तुह्मैं विन रहबै ॥ देखे बिना मयंकवदनवा हाय दुसह दुख सहबै ॥ पाती आधी भेंट बिचारो बांचि समुझि सुख लहबै ॥ मधुरअली महबूब मिलौगे कबै कमलपद गहबै ॥ १४६ ॥ रा० ॥ ईमन ॥ साखि राजकुँवरबिन हाय नहीं रहिजाई ॥ अब धरत नहीं मन धीर सो कछु न सुहाई ॥ लषिबो दूलह

रूप महा सुख पाई ॥ बोलनि मृदु बिहँसनि चलनि तकनि मन भाई ॥ या हाल लाल किये जात प्रीत कठिनाई ॥ कैसेकै राखब आन दरद उर छाई ॥ करिकै मिथिलापुर सून चले चारिउ भाई ॥ हमका दै विरह बिषाद खबरि बिसराई ॥ मनहरन छयल महबूबसों लगानि लगाई ॥ तजि मधुरअली कुलकानि संग चलिजाई ॥ १४७ ॥ रा० ईमन ॥ लाल मनहरन छयल आली ॥ हँसनि हाय जनु बसीमंत्र है नयनबान घाली ॥ जुलफैं छूटि वदनपर झलकैं मनहुँ फांस जाली ॥ मधुरअली घायल होइ घूमैं कठिन पीर साली ॥ १४८ ॥ रा० जंगला ॥ चलनेकी तयारी आजु अली ॥ मच्यो सोर अति कहर सहरमे हाय बिरह चहुँवोर गली ॥ भाइनसहित बिदा होइ रघुबर लसत तुरँगपर समर बली ॥ मधुरअली सुख खोइ बोइ दुख जात चली मिथिलेश-

लली ॥ १४९ ॥ रा० इमनी ॥ अब कब लषब दृगन चारिउ भांई ॥ सियासहित सूनो पुर कीन्हो दीन्हो दुख अति कछु न सुहाई ॥ आज बिहाल कीन पुरबासिन हैं मनहरन कुँवर सुख-दाई ॥ मधुरअली मिथिलेशनगरमें करुणा विर ह रहा तहँ छाई ॥ १५० ॥ रा० देश ॥ अवध-सैयां जात अवधपुर हाय ॥ दीन अति आनंद यहिविधि सब समाज बनाय ॥ अनुज सखन-समेत छबिनिधि चंदवदन देखाय ॥ जात नहिँ जान्यो दिवस निशि परम मंगल गाय ॥ अब तयारी जानि जहँ तहँ रहे सब पछिताय ॥ बिरहबश रनिवासभीतर दुसह दुख न समाय ॥ मधुरअली अचेत करिकै चले चारौ भाय ॥ ॥ १५१ ॥ रा० श्री पीलू ॥ मोरे हिय बसत अवधपियारे ॥ लाल बिहाल हाय हाँसि कीन्हो फिरि न खबरि लिया रे ॥ मारि नयनके बान

विशिष उर घायल करि दियारे ॥ मधुरअली दिलदार यार बिन चलन चहत जियारे ॥ १५२ ॥ रा० कुम्हार ॥ मोहिँ बिन देखे अवधेशकुँवर नैहर नहिँ भावै रे ॥ मनहरन लाल शोभा-विशाल देखत छटा छबि छकी बाल अब कल न परत दई हाय हाल मुख बोलि न आवै रे ॥ करि सुरति बीर दृग बहत नीर नहिँ नेक मोर मन धरत धीर कासों कहौं या दिलकी पीर अँग विरह सतावै रे ॥ चित चहत चली तबतो है भली अब नहिँ सुहात कुलकानि गली कर मींजि शोचबश मधुरअली छिन कलप बितावै रे ॥ ॥ १५३ ॥ रा० परज ॥ मै अपने बनरे सँग जैहौं ॥ रास कुंजमें दै गलबांही गातिहिँ अनेक बतैहौं ॥ नैनसयनदै पान पियाको सोई उगिल-न लै पैहौं ॥ मधुरअली कुलकानि छांड़िकै अवध-महलबिच रैहौं ॥ १५४ रा० भैरवी ॥ बीर

आज रघुबीर तीर हँसिकै मोहिँ मारी रे ॥ तबते शिथिल शरीर धीर नहिँ बढ़ी दुसह उर पीर हाय घायल करि डारी रे ॥ ऐसो लाल बिहाल हाल करि कहत बनत नहिँ बात दई मन काह विचारी रे ॥ मधुरअली घर गली न सूझैं कीजैं कौन उपाय सबै विधिते मैं हारी रे ॥ १५५ ॥ ॥ रा० भैरवी ॥ लाल बिन हाय नहीं रहि जाय ॥ कीजै कौन उपाय ॥ औंचक मिल्यो मोहिँ सखि मगमै मोतन मृदु मुसक्याय ॥ ऐसो हाल विरहके मारे अंग न दरद समाय ॥ तबते फिरति बावरीसी अब घर बन कछु न सुहाय ॥ करिकै सुरति श्याम सुंदरकी दृगन नीर वरसाय ॥ मधुरअली कोउ आनि मिलावै लेती कंठ लगाय ॥ १५६ ॥ रा० भोपाली ॥ हमारे पर सैनकी सांग चलाई ॥ कहा सुनी येकौ नहिँ मानत अवधछयल रघुराई ॥ तबते हाल कहौं का

सजनी दिन दिन दरद समाई ॥ मधुरअली नाहक मैं आई कुलकी कानि गमाई ॥ १५७ ॥ रा० झंझोटी ॥ सलोना प्यारा बांका बना रघुवीर ॥ सुभग श्याम सुकुमार मजेसे पहिरि विभूषण चीर ॥ मृदु मुसक्यानि बिलोकनि बोलनि कर कमलन धनु तीर ॥ मधुरअली छबि छटा छबीली बिहरनि सरजूतीर ॥ १५९ ॥ रा० झंझोटी ॥ ललन काहे मारे मोहिँ नयनकटारी ॥ कठिन पीर हाय भारी ॥ नाहक आय कलंक लगायो मैं हौं वारि कुमारी ॥ अब नहिँ बात छिपाये छिपैगी ऐसी भली न यारी ॥ मधुरअली घर जात बनै ना मै तुमसंग सिधारी ॥ १५९ ॥ रा० भोपाली ॥ अवधविहारी नयनशर मारी ॥ मैं अपनी मग चली जातती औंचक आज निहारी ॥ घायल परी बोलि नहिँ आवै सुधि बुधि सकल बिसारी ॥ मधुरअली घर जात बनै अब बढ़ी दरद

तन रारी ॥ १६० ॥ रा० गौरी ॥ देखो सखी सांझ समै सुषमा री ॥ खेलि सिकार सुभग सुषमानिधि आवत अवधविहारी ॥ मृदु मुसक्याय मोहि मन सबको ऐसो छैल सिकारी ॥ मधुरअली आवानि सुनि पियकी हरषित जनककुमारी ॥ १६१ ॥ रा० गौरी ॥ महलन रामकुँवर सखि आयो ॥ अनुजनसहित सिकार खेलिकै ऐसी छबि दरसायो ॥ मंद मंद पग धरत धरणिपर मातन माथ नवायो ॥ राई लोन उतारि मधुरअलि जननी कंठ लगायो ॥ १६२ ॥ रा० परज ॥ लाल मैं जोहि रही तुह्मैं कबसे ॥ आयो नहीं केहि दबसे ॥ ऐसी चलनि हाय नहिँ छूटै छाकि गई तेरी छबिसे ॥ बिन देखे कहुँ कल न परतु है भेंट भई है जबसे ॥ जो छल करने रह्यो छयलजू प्रीति किह्यो काहे तबसे ॥ सांची कहौ छोड़ि चतुराई पर्‍यो कौनके बलसे ॥ ऐसी प्रीतकी रीत

कठिन है नेह निबाहब ढबसे ॥ अब जो भई भई सो प्यारे लेहु संग मोहिँ अबसे ॥ मधुरअली कुलकानि छोड़िकै मैं चलिहौं कहि सबसे ॥ ॥ १६३ ॥ रा० कुह्मार ॥ दशरथराजदुलारो वा छलवारो है हो ॥ औंचक भेंट भई गलियनमें चली जात रहि सब अलियनमें तिरछी सैन चलाय सखी री क्या शर मारो है हो ॥ तबते हाय बिरहके मारे सुधि बुधि तो अब दीन बिसारे छिन पल जुग सम जात दई मोहिँ बिन वा कारो है हो ॥ मधुर-अली महबूब हमारो होत नहीं कहुँ चितते न्यारो ऐसी प्रीति लगाय गयो है पीतम प्यारो है हो ॥ ॥ १६४ ॥ रा० भैरवी ॥ प्यारो मोपै जदुआ डारि चला ॥ रसवश करिकै छला ॥ औंचक मिल्यो मोहिँ सजनी री कीन्हे कठिन कला ॥ हाय धीर नहिँ धरत मोर मन समुझायो अति भला ॥ मधुरअली कहुँ कल न परतु है बिन

दशरथके लला ॥ १६५ ॥ रा० नटमलारी ॥ प्यारो मोहिं छलिकै जात भयो ॥ फेरि न खबरि लयो ॥ बन प्रमोदमें मिल्यो अचानक मृदु मुसक्याय दयो ॥ तबते हाय बिरहके मारे नैनन नीर छयो ॥ मधुरअली दिलदार मेरे हिय दुखको बीज बयो ॥ १६६ ॥ रा० भैरवी ॥ ललनबिन कल न परत मोरी बीर ॥ करि करि सुरति हँसनि बोलनिकी नैनन बरसत नीर ॥ दिन नहिँ चैन रयन नहिँ निँदिया अँग अँग शिथिल शरीर॥ मधुरअली दिलदार यारबिन कौन हरै मोरी पीर ॥ १६७ ॥ रा० बिहारी ॥ मोरी श्याम सुँदरसों सुरति अँटकी ॥ जबते लषी जकीसी डोलति भूलिगई सुधि घट पटकी ॥ देखत नवल रूप अलबेलो बिहरनि वा सरजूतटकी ॥ मधुरअली वा बसीकरन है चितवनि हाय हिये खटकी ॥ १६८ ॥ रा० बिहारी ॥ सुनि मो-

ही री ललनकी मधुर बतियां ॥ दिन नहिँ चैन रयन नहिँ निँदिया अँग अँग बिरह किहे घातियां॥ बांकी तकानि तीरसी लागी तबते हाय दहति छतियां ॥ मधुरअली अति दरदके मारे मेरी बिवस भई मतियां ॥ १६९ ॥ रा० देवगिरी ॥ श्यामसों सखि लागी सुरतियां ॥ नहिँ भूलै वा छटा छबीली मृदु मुसक्यानि मनोहर बतियां ॥ बिरहके मारे मरी दई री मैं तलफति रहति रयन दिन छतियां ॥ मधुरअली निरदई दया नहिँ लिखी न हाय कुशलकी पतियां ॥ १७० ॥ रा० भीमपलास ॥ गजब छलवारी श्यामकेरी ॥ भेंट भई सरजूतट कुंजन मृदु मुसक्याय मोद दै पुंजन मारि नयन शर हाय हिये बिच भूली सुधि धन धाम केरी ॥ तबते कल न परत बिन देखे नहिँ तनमें आराम करी ॥ वा बोलनि वा चलनि गरूरी मिलति नहीं पाऊं कहँ दूरी बिरहपीर

सहिजात नहीं है जानि विधाता वामके री ॥ मधुरअली नहिँ मरी जियातिहौं आस लालके नामकेरी ॥ १७१ ॥ रा० चैती ॥ नजारा प्यारा मारा है ॥ नयनकृपाण बाढ़ कजरेकी घायल करिडारा है ॥ तबते हाय दरदके मारे नैनन जल ढारा है ॥ मधुरअली या हाल लाल करि पाउँ धारा है ॥ १७२ ॥ रा० देशकी कमाली ॥ बांके नयन प्यारेके तीक्षन जनु तीर ॥ अंजन सान सवाँरे लागत दै पीर ॥ भेंट अचानक होइगै सर-जूतीर ॥ मधुरअली घर कैसे जावै मोरी बीर ॥ ॥ १७३ ॥ अथ चेतावनी ॥ रा० भैरवी ॥ भरोसे रामके रहिये ॥ रूप अनूप बिलोकि रयन दिन नामैको कहिये॥ चरणसरोज युगुल सुखसागर तिनहिँ सदा गहिये ॥ मधुरअली सिख मानि सुधासम भौ-दुख ना सहिये ॥ १७४ ॥ रा० झंझोटी ॥ समुझ मन स्वारथी संसार ॥ अनुजसहित परिवार झूठ

सब दगादारके यार ॥ खेल खाय बालापन बीते ज्वान जुवाको भार ॥ वृद्ध भये कर कांपन लागे ना कोउ सुनत पुकार ॥ शिर धुनि धुनि पछिताय हाथ है येक नहीं निरधार ॥ मधुरअली सुख-सिंधु सुहावन दशरथराजकुमार ॥ १७५ ॥ रा० झंझोटी ॥ मूढ़ मन तेरी बुद्धि बही है ॥ शुभ मारगमें प्रीति नेक नहिँ विषैकी गैल गही है॥ कायर कूर कहा नहिं करते संतन सिषै कही है ॥ पापी पाय भलो मानुष तन अब कस देह दही है ॥ धन दारा सुत सूम सदन सब काके संग रही है ॥ मधुरअली भवपार यतन को रघुबर नाम सही है ॥ १७६ ॥ रा० भैरवी ॥ केहि विधि कटै जियकी जरन ॥ गमन तीरथ कतहुँ नहिँ किये नहीं हरियश करन ॥ संत द्विजसे द्रोह राखत संघ नीचन बरन ॥ नित्य निंदा करत सबकी यह तेरो परन ॥ विषैकी चरचा

चलावत पेट पूरो भरन ॥ मधुरअली न नेक कहुँ सुख बिना भगवतसरन ॥ १७७ ॥ रा० देश ॥ कबहुँक चित्रकूट मन लागै ॥ मंदाकिनि शुचि मज्जन करिकै लोभ मोह मद भागै ॥ लषि द्रुम लता प्रमोद बिपिनके युगुलचरण अनुरागै ॥ मधुरअली उर और चाह नहिँ नवल नेह नित मांगै ॥ १७८ ॥ रा० देश ॥ चित चाहौ चित्रकूट चलनको ॥ कामदनाथ सनाथ करैंगे लोभ मोह दुख दोष दलनको ॥ मंदाकिनि मन मोद बढ़ावनि सुभग सुहावनि देनि फलनको ॥ मधुरअली सुख कहँलौ करिये जहँ बिहार घनश्यामललनको ॥ १७९ ॥ रा० भैरवी ॥ चित चोरि लियो चित्रकूटगली ॥ निरमल नीर बहति मंदाकिनि जेहि मज्जनते होत भली ॥ तेहि तट बने सुभग बहु मंदिर जहँ शोभित रघुनाथ लली ॥ मधुरअली सुखधाम मनोहर काह

करी कलिकाल छली ॥ १८० ॥ रा० इमनी ॥ अवधछयलकी छबि बनि आई री ॥ देखतही मैं गई हौं बिकाई री ॥ तबते कल न परत निशि बासर हाय दई मोहिं कछु न सुहाई री ॥ तेहिपर बोल सुनत पपिहाके अँग अँग मोरे बिरह सताई री ॥ मधुरअली नाहक मैं आई लोकलाज कुलकानि गमाई री ॥ १८१ ॥ रा० भोपाली ॥ दरद मोरी जानत नहिँ दिलदार ॥ रसवश करि हँसिकै मारगमें नैनन मारि कटार ॥ तबते वीर पीरके मारे बहत दृगन जलधार ॥ मधुरअली अवधेशलालबिन जरती बिरह दमार ॥ १८२ ॥ रा० झंझोटी ॥ लालके नैन मयनके तीर ॥ करत दुसाल हाय अलियनउर घूमि गिरैं जनु बीर ॥ बोलि न सकैं श्वास लै सुसकैं अँग अँग शिथिल शरीर ॥ मधुरअली अति कसक करेजे कौन पटावै पीर ॥ १८३ ॥ रा० बिहाग ॥ लालबिन

को मोरी दरद हरै ॥ जबते तकानि तीर उर लागी दूनी पीर करै ॥ कठिन प्रीतिकी रीति सखी री नैनन नीर झरै ॥ मधुरअली महबूब मिले बिन बिरहके ज्वाल जरै ॥ १८४ ॥ रा० बिहाग ॥ लालबिन कल न परै रतियां ॥ नहिँ भूलैं छिन हाय सखी री पीतमकी बतियां ॥ नहिँ सुहाय अब मोहिँ दई री दही जाति छतियां॥मधुरअली दिलदार यार बिन बिरह किहे घातियां ॥ ॥ १८५ ॥ रा० झंझोटी ॥ प्यारेकेरी बिहँसनि हियमें वसी है ॥ बदनचंद सुखसिंधु श्यामको तापर अलक लसी है ॥ केसरतिलक भाल रुचि राजत जनु छबि आनि फँसी है ॥ मधुरअली लषि अवधछयलको सब कुलकानि नसी है ॥ ॥ १८६ ॥ रा० कलँगड़ा ॥ मारी रे दिलदार नजरिया ॥ मैं सरजूजल भरन जातती भेंट भई मोसे बीच डगरिया ॥ ताकी हूल हिये बिच

कसकत विषम जोर अनिआरि कटरिया ॥ मधुरअली तबते मैं घायल तन मनकी कछु रहि न खबरिया ॥ १८७ ॥ रा० झंझोटी ॥ लागी रे तन मन धन बाजी ॥ जबते लषी सिया बनरेको तबते हमार मन राजी ॥ ऐसी लगनि लगी नहिँ छूटै का करिहैं कोउ पाजी ॥ मधुरअली दंपतिसमीप लहि लोकलाजते भाजी ॥ १८८ ॥ रा० भोपाली ॥ जबते जनकलली अपनाई ॥ तबते सुगम भयो सुखसागर नागर पिय रघुराई ॥ लषि मुखचंद अनंदकंदको नैननको फल पाई ॥ मधुरअली निजभाग भली है समुझि सनेह सगाई ॥ १८९ ॥ रा० देवागिरी ॥ का करौं प्यारो भयो निरमोही ॥ हे मन हठी कहा नहिँ मानत बहु समुझायों तोंही ॥ निशि अँधिआरी कारी बिजुरी चमंकै चलत न बाट बटोही ॥ मधुरअली मैं मरी लालबिन हाय दरद नहिँ

वोही ॥ १९० ॥ रा० देवगिरी ॥ रघुबर मोरि सुरति बिसराई ॥ हाय दई तलफत निशि वासर ना लिखि पतियाँ पठाई ॥ ना निशि नींद नयन जल बरसत छिन पल कलप बिताई ॥ मधुर-अली अवधेशलालबिन नहिँ कहुँ परत रहाई ॥ ॥ १९१ ॥ रा० बहार झपताल ॥ देखु आलि लालकी नवल छबि उर बसी ॥ मणिनम क्रीट कटि पीत पटकी प्रभा नीलघनसंग जनु दा-मिनी अति लसी ॥ श्रवण कुंडल कलित गंड अस्थलनपै मनहुँ विधुडोलमे मीन लेखन धसी ॥ जुलुफ मुखचंदपर लटकि लहरैं करैं ना-गिनी आय जनु मोरि मतिको डसी ॥ चपल अति नैन दोउ पैन वाके बड़े मनहुँ ये मैनके बान गांसी गसी ॥ नासिका सुभग शुक तुंड दाड़िम दशन बिंबफल अधरकी अधिक आभा रसी ॥ हँसति वा फँसनि है हाय जनु सैफसी करत क-

तलाम सुधि सबनकी त्यों नसी ॥ चुभ्यो चित चिबुककी गाड़ गालिम गजब मनहुँ दस चारकी सकल शोभा फँसी ॥ गोफ अरु गुंजके मध्य कंठा कलित माल गजमणिनकी मनहुँ सुरसरि जसी ॥ प्रबल भुजदंड आजानु विजयी विद्या करत परकाश अति सुखद अंगद कसी ॥ रतनते जड़ित युग कड़े कंकनसहित अजब छबि छिटिकि जनु रही पूरण शसी ॥ धनुष अरु बान कर कमल सोहत सही कही नहिँ जात छबि मधुरअलि कवि नसी ॥ १९२ ॥ रा० झंझोटी ॥ आजु सियाजूकी लसति लोनाई ॥ कटवा कंठ पोत मिलि सोहत चंपकलीकी अति छबि छाई ॥ बाजूबंद मणि-नमै राजत तेहि प्रकाश चपला दबि जाई ॥ भू-षण सकल सुदेस जहां जस करि सिँगार सखिय-न पहिराई ॥ कटि घाँघरो नील शुचि सारी ता-पर रचि कंचुकी सुहाई ॥ यावक चरण हरण

दुख जनके मधुरअली ताकी शरणाई ॥ १९३ ॥ रा० झंझोटी ॥ सिया तेरी बोलनिकी बलिजाऊ ॥ सुनि सुख मानि सोहागिलि होइ अब आनँद-सिंधु समाऊँ ॥ बीरी देउ लेउ लोचनफल सो प्रसाद नित खाऊँ ॥ मधुरअली रघुबरकी भामिनि तू तजि और न ठाऊँ ॥ १९४ ॥ रा० भोपाली ॥ अलकैं जनकललीजूकी झलकैं ॥ अँतरभरी कारी कृपाणसी ललित कपोलन छलकैं ॥ चंद्रवदन रसके लेबेको जनु नागिनिसी हलकैं ॥ मधुरअली कहुँ परत न पलकैं लपि लखि अँखियां ललकैं ॥ १९५ ॥ रा० इमनी ॥ हाय दरद को करै निवारन ॥ घायल करि आलि गयो सांवरो तिरछी ताकि मारि तरवारन ॥ तबते कहरति डहर परी हौं देखि लोग मोहिँ हँसत हजारन ॥ मधुरअली अब जियब न जानब बिना मिले पीतम अँकवारन ॥१९६॥ रा० इमनी ॥ भोर

भयो आयो नहिँ लालन ॥ काहि कछु और कीन कछु औरै जाय फँस्यो नइ नारिके जालन ॥ नींद न परी रयन भरि जागी आपनि दशा कौन सो चालन ॥ मधुरअली दिल दरद न वाके हाय छली है परघरघालन ॥ १९७ ॥ भोर भयो तब आयो छली री ॥ सेज सँवारि राति भरि जागी तू आवनकी तकति गली री ॥यावक भाल पीक दोउ गालन या लालनछबि दीन अली री ॥ मधुरअली बोलत नहिँ सकुचत छलवारी नहिँ येक चली री ॥ रा० इमनी ॥ देखु अली छबि जनकललीकी ॥ बदनचंद्रचंद्रिका सुहावन उरबिच शोभा चंपकलीकी ॥ ऐसो रूप अनूप मनोहर कोटिन रति द्युति मानमलीकी ॥ सुखकी खानि हानि सब दुखकी जीवन धन प्रिय मधुरअलीकी ॥ १९९ ॥ रा० भोपाली ॥ बतावो प्यारे कहना बिताई रतियां ॥

अनिआरे अलसाने लोचन सभै कहत बति-
यां ॥ पीक लीक लगि ललित कपोलन नख-
क्षत सोहैं छतियां ॥ मधुरअली गमनौ वहिके
भवनै जेहिको लिखत पतियां ॥ २०० ॥
रा० देश ॥ लालबिन कैसे रहौं मोरी बीर ॥ को
जानै मोरी पीर ॥ ओंचक भेंट भई सजनी री
श्रीसरजूके तीर ॥ करि करि सुरति हँसनि
बोलनिकी नैनन बरसत नीर ॥ मधुरअली कहुँ
कल न परतु है जियरा धरत न धीर ॥ २०१ ॥
रा० जिला ॥ नहिँ आया श्याम हमारा ॥
वन प्रमोदमें मिल्यो अचानक तिरछी नैंन निहा-
रा ॥ तबते हाय बिरहके मारे दरद न जात
सँभारा ॥ मधुरअली मनहरनलालबिन बहत
नयन जलधारा ॥ २०२ ॥ रा० जिल्ला ॥
सियपियाबिन पीर न जाती ॥ करि करि सुरति
चलनि चितवनिकी हाय दहति मोरी छाती ॥

धरत न धीर बीर मन मेरो करत विरह अँग घाती ॥ मधुरअली अति प्रीत कठिन यह कर मींजाति पछिताती ॥ २०३ ॥ रा० झंझोटी ॥ सजन साजि आज अवधको जात ॥ कढी हाय कैसे अब दिन अरु रात ॥ सुनिय जँह तहँ भोर जायगी बरात ॥ तबैते हे आली कछु न सुहात ॥ विरहकी मारी मैं तो ठाढी पछितात ॥ रहब उन विन कैसे जिय अकुलात ॥ लाल मीठी बतियां कहत मुसक्यात ॥ सुरति करि तवासो तपत अब गात ॥ लगनि नीकी लागी नहिँ छूटब देखात ॥ मधुरअलि खाये बिष बनी अब बात ॥ २०४ ॥ रा० जंगला ॥ सहैंगी कैसे नैंनबान-की मार ॥ अंजनबाढ़ धरी क्या बांकी जुलुमि-दार तरवार ॥ अवधछयल पिय रसिकशिरोमणि दशरथराजकुमार ॥ मधुरअलीकी बिनै यही है प्रीत करो अब पार ॥ २०५ ॥ रा० बहार झपताल ॥

देखु सखि आजु छबि जानकीजानकी ॥ माणिनमय मौर शिर सुभग सुषमासदन वदनपर प्रभा जनु छिटिकि रहि भानकी ॥ नैन दोउ पैन जनु मयन मदके भरे करत कतलाम सुधि हरत आलि आनकी ॥ दिपत दोउ कानमें गजब कुँडल कलित नजर ठहरात नहिँ मनहुँ तडितानकी ॥ भृकुटि बर बंक क्या बनी जनु धनुष है तकानि वा बीरकी मनहुँ गति बानकी ॥ बचन बरसत सुधा सुनत सुख होत मन कहत नहिँ बनत कछु मंद मुसक्यानकी ॥ भांवबरी परतमें लषत शोभा सुरन वरषि परसून धुनि होतिहै निसानकी ॥ करत कुलरीत दुहुँवोर गुरु प्रीत करि कन्यो सब चार पुनि कि सौ विधि दानकी ॥ देखि श्री अवधपति पूत पुतउनसहित मोदमैं मधुरअलि नहीं पहिँचानकी ॥ २०६ ॥ रा० भोपाली ॥ बनैते आवत रघुकुलभान ॥ लषन जानकी रा०

हित सखी री बैठे पुहुपाविमान ॥ जामवंत सुग्रीव नील नल औ अंगद हनुमान ॥ सखा बिभीषण सुत्दृद संगमें प्यारो परम सुजान ॥ दुबिद मयंद गवाक्ष केसरी ऐसे भट बलवान ॥ जै जै करत सुमन सुर बरसत तासु बधू करैं गान ॥ होत कुलाहल अवधनगर सब बाजत धमकि निसान ॥ भरतामिलाप भयो तेहि औसर बिसर्‍यो सबन अपान ॥ होति तयारी राजतिलककी प्रमुदित मातन जान ॥ सिंहासन आसीन राम सिय मधुरअलीके प्रान ॥ २०७ ॥ रा० बहार झपताल ॥ देखु सखि आज रघुराज रँगमें भर्‍यो ॥ जंत्र जमि बजत क्या सुखद स्वरको लिहे लिहे मृदु गान त्यों चित्त सबके हर्‍यो ॥ मणिनमै जड़ित पिचकारि करमें लिहे बरसि बहुरंग नहिँ छैल टारे टर्‍यो ॥ देखि अति भीर रघुबीरकी सखि सबै लषनको धाय ललकारि

हँसिकै धऱ्यो ॥ बनै तियबेष लै जाय सिय पा-
समें देखिकै छबि छटा सुमनबरषा कऱ्यो ॥
मऱ्यो बहुरंग आनंदको तेहिसमै मंजुअलि लष-
न पदकमल सियके पऱ्यो ॥ २०८ ॥ रा०
काफी ॥ अवध लाल रसिया हमारे मारि नयन-
शर ॥ तबते दरद गरद हा कीन्हों कर मींजाति
पछिताति दृगन दोउ आंसुनमें भर ॥ करि करि
सुराति श्यामसुंदरकी भई बावरी बीर लगी घर
सासु ननँद डर ॥ मधुरअली बिरहाके मारे चल-
व कवनबिधि होई मनहुँ पक्षी जस बिनपर
॥ २०९ ॥ रा० भोपाली ॥ अवधबनरा दृग
बान काहे मारे ॥ मृदु मुसक्याय डारि जादूसी
घायल रसिया करि डारे ॥ की सँग लेउ रहौ
मिथिलामें दशरथके बारे प्यारे ॥ मधुरअली करि
प्रीति फँसायो हाय जात अब जिय जारे ॥
॥ २१० ॥ रा० भीमपलास लावनी ॥ सखि

अवधलाल बिन बिरहभरी सुरझाती ॥ अब का-
ह करौं कहँ जाउँ दरद करि छाती ॥ दोउ नैनन
ढरकत नीर नेहरसमाती ॥ करि सुरति सांवली
रूप दहति नित छाती ॥ तृण तोरि ताकि तस-
बीर भई पछिताती ॥ कर मींजि शोचबश ठादि
बीतिगै राती ॥ अब सुसकति सूननी सेज लषत न
सुहाती ॥ छिन पल युग बीते जांय दशा यहि
भांती ॥ मैं कवन करमकी हीन हाय बिलला-
ती ॥ लै मधुरअली उर श्वास हहा करि खाती ॥
॥ २११ ॥ लावनी ॥ सखि श्याम बिना
सब सून दून दुख भारी ॥ तेहिते अति बिकल
बिहाल बिरहकी मारी ॥ यकतो अब सावन
मास रैन अँधिआरी ॥ गरजतजल बरसत मेघ
पवनगति न्यारी ॥ मैं धरौं कवनबिधि धीर
नैन वहै बारी ॥ पपिहा दइमारो बोलि अधिक
तन जारी ॥ कीजै कस कौन उपाय हाय अब

हारी ॥ खाये बिष बनत विशेष यही मन धारी ॥ मोरे करत करेजे कहर जुल्फकी कारी ॥ मृदु हँसनि बिलोकनि बोलनि चलनिपर वारी ॥ मैं कौन कवन सुधि करौं कवन दुख टारी ॥ मोरी मधुरअली दिलदार सो सुरति बिसारी ॥ २१२ ॥ रा० जंगला ॥ नहिँ भूलै सुरतिया लालकी ॥ वा बोलनि वा हँसनि माधुरी वा चितवनि छबिजालकी ॥ मंद मंद पग धरत धरणिपर क्या बांकी गजचालकी ॥ मधुरअली प्यारेबिन व्याकुल ऐसी दशा भई बालकी ॥ ॥ २१३ ॥ रा० जंगला ॥ नैनोंकी तीरैं मारि दिया ॥ घायल करि सजनी मारगमें बाका छयल-वा सियको पिया ॥ हँसनि हाय जनु बसीमंत्र है कहि बतियां मृदु मोहि लिया ॥ मधुरअली अति दरदके मारे लाल मिले बिन जात जिया ॥ ॥ २१४ ॥ रा० झंझोटी ॥ लालबिन कल न

परै मोरी बीर धरौं हाय कैसे धीर ॥ करि अति प्रीति पिआय प्रेमरस मारि दृगनकी तीर ॥ करि करि सुरति चलानि चितवनकी अँग अँग शिथिल शरीर ॥ मधुरअली बिरहाके मारे बढ़ी दुसह हिय पीर ॥ २१५ ॥ रा० परज ॥ सुरति मोरी भूलै ना प्यारे दशरथ राजदुलारे ॥ तेहिपर मृदु मुसक्याय मजेसे नैनबान हँसि मारे ॥ पकरि पाणि सरहज कहि बातै जल दृग बहत पनारे ॥ मधुरअली कब दरस देखैहौ प्रीति फांस डारे ॥ ॥ २१६ ॥ रा० झंझोटी ॥ छयल छबि देखि छकी मैं भवन कवनबिधि जाऊँ ॥ औंचक मिल्यो मोहिँ मारगमें ठाढ़ी हाय पछिताऊँ ॥ जो कोउ देइ मिलाय लालको ताके परौं मैं पाऊँ ॥ मधुरअली बिरहाबश व्याकुल पीतम पाय जुड़ाऊँ ॥ ॥ २१७ ॥ रा० झंझोटी ॥ करु मन युगुलरूपको ध्यान ॥ दशरथ लाल लली सुषमानिधि

हैं दोउ जीवन प्रान ॥ बोलत मधुर सुधा जनु बरसत चित्त फँसन मुसक्यान ॥ मधुरअली दंपतिकी पटतर लषि न परत कोउ आन ॥ ॥ २१८ ॥ रा० गौरी ॥ करिकै प्रीति बिसरायो हो सखि श्याम मोरे नहिँ आयो ॥ करि करि सुरति हँसानि बोलनिकी कर मींजति पछितायो ॥ दिन नहिँ चैन रैन नहिँ निँदिया नैनन जल बरसायो ॥ मधुरअली मनहरन कुँवरबिन हाय बिरह अँग लायो ॥ २२० ॥ दोहा ॥ युगुल-विनोदपदावली, भई पूरि सुख पाय ॥ मधुर-अली तेहि गायकै, भवभयदुख बिसराय ॥ ॥

इति श्रीयुगुलानन्य मधुरअलीकृत युगुलविनोद-पदावली समाप्ता ॥

1678